Deg-2
HIST (H) P-II

महाराष्ट्र एवं दक्षिण भारत का विस्तार

(प्रथम चरण)

मंगोल आक्रमणों से सफलतापूर्वक निपटने तथा अपनी सेना और आंतरिक प्रशासन को पुनर्गठित करने के बाद अलाउद्दीन अपनी सर्वाधिक साहसिक योजना को मूर्त रूप देने यानी दक्कनी राज्यों पर आक्रमण करने एवं उन्हें दिल्ली के नियंत्रण में लाने के लिए तैयार हुआ। महाराष्ट्र एवं दक्षिण भारत खजानों और सोने के देश के रूप में विख्यात थे। उनके विख्यात हस्तशिल्पों और उन्नत बंदरगाहों के कारण वहां सोने का समागम बना रहता था जिसे पीढ़ियों से शासक गण एकत्र करते आ रहे थे। इस क्षेत्र में धन और यश दोनों ही अर्जित किये जा सकते थे।

महाराष्ट्र — अलाउद्दीन का महाराष्ट्र के साथ पहला सम्पर्क 1296 ई० को हुआ था, जब वह कड़ा से चलकर बुन्देलखंड के दुर्गम मार्गों से होते हुए 8000 घुड़सवारों वाली सेना के साथ देवगिरी के सामने अचानक प्रकट हुआ और उसने यादव शासक रामचन्द्र और उसके बाद उसके पुत्र सिंहाना को पराजित किया। वह धन की एक बहुत बड़ी राशि के साथ लौटा जबकि रामचन्द्र ने उसे एक वार्षिक कर के रूप में पेशकश देते रहने का आश्वासन दिया।

अमीर खुसरो के अनुसार अलाउद्दीन ने मलिक काफूर को यह आदेश देकर भेजा था कि रामचन्द्र और उसके परिवार को किसी भी तरह का नुकसान न पहुँचाया जाए। कमला देवी के आग्रह पर देवल देवी का विवाह अलाउद्दीन के पुत्र और संभावित उत्तराधिकारी खिज्र खां के साथ कर दिया गया। यद्यपि खिज्र खां का दुखद अंत हुआ। किन्तु इसके द्वारा राजपूत राजाओं के साथ विशेष संबंध स्थापित करने की अलाउद्दीन की नीति के अधिक विस्तार की झलक मिलती है।

P.T.O

दक्षिण राज्य →

दक्षिण भारत में सर्वाधिक महत्वपूर्ण राज्य थे वारंगल राज्य जिसके शासक काकतीय थे, एवं होयसल राज्य जिनकी राजधानी द्वार समुद्र में थी। उनसे भी दक्षिण में माबर तथा मदुरै के पांड्य शासक थे। ये सभी एक दूसरे के साथ बराबर युद्ध करते रहते थे और देवगिरि के यादवों के साथ भी उलझते रहते थे। उनके युद्धों का मुख्य कारण साम्राज्यीय विवाद था।

देवगिरि में पाँव जमाने और वहां के राजा को अपना विश्वस्त सहयोगी बनाने के पश्चात सन 1309 और 1311 के बीच अलाउद्दीन ने दक्षिणी राज्यों से उनका संचित धन उगलवाने एवं दिल्ली का आधिपत्य स्वीकार कराने तथा वार्षिक कर अदा करने हेतु उन्हें विवश करने के उद्देश्य से मलिक काफूर के नेतृत्व में दो सैनिक अभियान भेजे। इनमें से किसी भी राज्य को सल्तनत में सम्मिलित करने तथा उन्हें प्रत्यक्ष प्रशासन में लाने का अलाउद्दीन का कोई इरादा नहीं था क्योंकि उसे पता था कि दूरियां और भिन्न स्थितियां ऐसे किसी प्रशासन को कठिन और खतरनाक बना देगी।

तेलंगाना में वारंगल के विरुद्ध भेजे पहले अभियान (1309-10ई) के करीब छह महीने लम्बी एक मजबूत घेराबंदी के बाद जब बाहरी किले पर कब्जा कर लिया गया और भीतरी किले का पतन होने की भी सम्भावना थी तो राय ने शांति का प्रस्ताव भेजा। जिसे मान लिया गया।

इन सभी अभियानों के परिणामस्वरूप उस समय तो व्यापार में भी कोई विशेष हानि नहीं हुई जब तक वहाँ अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में राजनीतिक स्थिरता कायम नहीं हो गई, किन्तु इन अभियानों ने अगले कदम यानी समायोजन का मार्ग प्रशस्त कर दिया।